उदारवादी सिद्धांत :→ Liberal Theory

राज्य के कार्य-क्षेत्र के संबंध में तीन दृष्टिकोणों का वर्णन किया गया है जिन्होंने लम्बे काल तक समाज को प्रभावित किया है। वर्तमान व्यक्ति को साध्य मानकर राज्य को उसके विकास के लिए एक अत्यंत आवश्यक माध्यम के रूप में स्वीकार किया गया है, अतः राज्य व्यक्ति कल्याण की विस्तृत व्यवस्था करता है और इसी कारण उसका कार्य-क्षेत्र भी विस्तृत हो गया है, इस प्रकार व्यक्ति को साध्य मानकर राज्य को उसकी पूर्ति के लिए माध्यम के रूप में उपयोग करने वाली विचारधारा को उदारवादी विचारधारा के नाम से पुकारा जाता है।

उदारवादी सिद्धांत का उदय एवं विकास Rise and Development of Liberal Theory :→ यूनानी विचारकों में सोफिस्टों ने व्यक्ति स्वातन्त्र्य को अत्यधिक महत्व दिया है और राज्य को व्यक्ति के हितों की पूर्ति करने वाला कृत्रिम साधन माना है। आशीर्वादम का कथन है कि प्रारम्भिक युग में राज्य के कार्य-क्षेत्र का प्रश्न इतना महत्वपूर्ण नहीं समझा गया था जितना वर्तमान में समझा जाता है। सुकरात जैसे लोगों का राज्य से संघर्ष अवश्य हुआ था किन्तु उस काल में सामान्यतः यह मान्यता सर्वस्वीकृत थी कि व्यक्ति की स्वतंत्रता का महत्व राज्य में ही है और व्यक्ति को अपने सर्वोच्च विकास के लिए राज्य में ही निवास करना चाहिए।

रोमन साम्राज्य तथा उसके पश्चात की परिस्थितियों में भी तत्कालीन राजनीति चिन्तकों के सामने राज्य के कार्य-क्षेत्र का प्रश्न महत्वपूर्ण नहीं था। मध्ययुग का काल चर्च और राज्य के बीच सर्वोच्चता के लिए संघर्ष का काल था और मध्य युग के अंत में राष्ट्रीय-राज्य की सर्वोच्च सत्ता के रूप में विजय हुई थी।

Scanned with OKEN Scanner

सत्रहवीं शताब्दी का महान दार्शनिक जॉन-लॉक सम्भवतः पहला विचारक था जिसने राज्य के कार्य-क्षेत्र को व्यक्ति के प्राकृतिक अधिकारों के सन्दर्भ में सीमित करने की बात कही है। अठारहवीं शताब्दी में व्यक्तिवाद का स्वरूप नकारात्मक था जिसमें राज्य को आवश्यक बुराई मानकर उसे केवल बाह्य आक्रमणों से सुरक्षा, आंतरिक शान्ति व व्यवस्था की स्थापना तथा व्यक्तियों के पारस्परिक संबंधों को विनियमित करने जैसे कार्य ही दिए जाने का समर्थन किया गया था किन्तु बाद के व्यक्तिवादियों ने व्यक्ति के कल्याण के कार्य भी राज्य को सौंपना उचित समझा। साथ ही व्यक्ति की स्वतंत्रता पर भी उन्होंने पर्याप्त बल दिया। व्यक्तिवाद के उपरान्त इन्हीं दोनों रूपों को 'उदारवाद' के नाम से पुकारा जाता है। राज्य के कार्यों के संबंध में नकारात्मक उदारवादियों व सकारात्मक उदारवादियों के विचारों का विवरण निम्नलिखित है—

नकारात्मक उदारवाद के अनुसार राज्य के कार्य :→ प्रारंभ में उदारवादियों ने व्यक्ति के कार्यों में अधिक हस्तक्षेप तथा राज्य द्वारा उनकी स्वतंत्रता का अपहरण किए जाने पर विरोध किया है। मनुष्य को स्वतंत्र छोड़ देने का उन्होंने समर्थन किया है और उसके कार्यों में राज्य को हस्तक्षेप न करने का परामर्श दिया है। जिन दार्शनिकों ने व्यक्तिवाद के नकारात्मक स्वरूप का प्रतिपादन किया, उनमें एडम स्मिथ, जेरेमी बेन्थम तथा हर्बर्ट स्पेन्सर प्रमुख हैं, जो निम्न लिखित हैं।→ अठारहवीं शताब्दी के महान विचारक (1723-1790) एडम स्मिथ को आधुनिक आर्थिक विचारों का जनक माना जाता है। औद्योगिक क्रांति के काल में स्मिथ ने तत्कालीन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए व्यक्ति के आर्थिक क्षेत्र में राज्य के हस्तक्षेप का विरोध किया था। उसने राज्य के कार्य-क्षेत्र को शान्ति, व्यवस्था व न्याय की स्थापना तक सीमित कर दिया था और कहा कि आर्थिक क्षेत्र को आर्थिक नियमों द्वारा विनियमित होने के लिए स्वतंत्र छोड़ दिया जाना चाहिए।

Scanned with OKEN Scanner